नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

## विकसित भारत 2047 : क्रियान्वयन की ओर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में गुरुवार को हुई साढ़े चार घंटे लंबी मंत्रिपरिषद बैठक केवल प्रशासनिक समीक्षा भर नहीं थी, बल्कि यह उस भारत की रूपरेखा तय करने का प्रयास थी, जिसे सरकार वर्ष 2047 तक 'विकसित राष्ट्र' के रूप में देखना चाहती है. आजादी के शताब्दी वर्ष को लक्ष्य बनाकर केंद्र सरकार जिस प्रकार दीर्घकालिक नीति, संरचनात्मक सुधार और प्रशासनिक बदलावों पर फोकस कर रही है, उससे स्पष्ट है कि 'विकसित भारत 2047' अब केवल राजनीतिक नारा नहीं, बल्कि शासन का केंद्रीय विजन बन चुका है. बैठक में प्रधानमंत्री मोदी का यह संदेश महत्वपूर्ण है कि 'जो हो गया, उसे पीछे छोड़िए, अब भविष्य पर फोकस कीजिए.' यह कथन दरअसल भारतीय शासन व्यवस्था की उस मानसिकता को बदलने का संकेत है, जो लंबे समय तक तात्कालिक राजनीति और अल्पकालिक योजनाओं तक सीमित रही. मोदी सरकार अब मंत्रालयों से अगले दो-तीन वर्षों की नहीं, बल्कि अगले दो दशकों की सोच के साथ काम करने की अपेक्षा कर रही है. यही कारण है कि सभी मंत्रालयों को कानून, नियम, नीति और कार्यशैली—इन चार स्तरों पर सुधारों का रोडमैप प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए.

इस बैठक का सबसे महत्वपूर्ण पहलू इज आफ लिविंग पर जोर रहा. पिछले एक दशक में सरकार ने इज अआफ डूइंग बिजनेस के जरिए निवेश और कारोबार का माहौल सुधारने की कोशिश की, लेकिन अब फोकस सीधे नागरिक जीवन की गुणवत्ता पर है. आम आदमी को सरकारी दफ्तरों, कागजी प्रक्रियाओं और नौकरशाही की जटिलताओं से राहत देना ही असली सुशासन की कसौटी बनेगा. प्रधानमंत्री द्वारा फाइलों के त्वरित निपटारे और अनावश्यक देरी समाप्त करने पर दिया गया जोर इसी सोच को दर्शाता है. 'मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस' का मंत्र भी इस बैठक का केंद्रीय संदेश रहा. इसका अर्थ केवल सरकारी हस्तक्षेप कम करना नहीं, बल्कि ऐसी व्यवस्था तैयार करना है जहां सरकार नियंत्रणकर्ता से अधिक सहयोगी की भूमिका निभाए. डिजिटल गवर्नेंस, डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर, ऑनलाइन सेवाएं और पारदर्शी प्रक्रियाएं इसी मॉडल की आधारशिला हैं. यदि यह सोच ईमानदारी से जमीन पर उतरी, तो प्रशासनिक भ्रष्टाचार और लालफीताशाही में बड़ी कमी आ सकती है.

हालांकि, विकसित भारत का सपना केवल सरकारी बैठकों और प्रस्तुतियों से पूरा नहीं होगा. इसके लिए राज्यों, निजी क्षेत्र, शिक्षा संस्थानों और समाज की समान भागीदारी जरूरी होगी. भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है तो रोजगार, कौशल विकास, तकनीकी नवाचार, कृषि सुधार, ऊर्जा सुरक्षा और न्यायिक दक्षता जैसे क्षेत्रों में ठोस परिणाम देने होंगे. केवल आर्थिक वृद्धि दर पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि सामाजिक समानता और संस्थागत मजबूती भी उतनी ही महत्वपूर्ण होगी. विदेश मंत्री एस. जयशंकर द्वारा प्रधानमंत्री की पांच देशों की यात्रा और मिडिल ईस्ट संकट पर दी गई जानकारी यह भी बताती है कि विकसित भारत का विजन अब घरेलू सीमाओं तक सीमित नहीं है. वैश्विक अस्थिरता, ऊर्जा संकट और भू-राजनीतिक तनावों के बीच भारत को अपनी अर्थव्यवस्था और आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित रखना होगा. आने वाले वर्षों में भारत की वैश्विक भूमिका और जिम्मेदारियां दोनों बढ़ने वाली हैं.

स्पष्ट है कि सरकार अब 'विजन मोड' में प्रवेश कर चुकी है. चुनौती यही है कि यह विजन कागजों से निकलकर गांव, शहर और आम नागरिक के जीवन में कितना बदलाव ला पाता है. क्योंकि विकसित भारत का वास्तविक अर्थ केवल बड़ी अर्थव्यवस्था नहीं, बल्कि बेहतर जीवन, सक्षम व्यवस्था और आत्मविश्वासी नागरिक भी है.

# सनातन को मिटाने की राजनीति पर फिर बवाल

राजेश कुमरावत सार्थक

> राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि वोटबैंक की राजनीति में धार्मिक प्रतीकों और आस्थाओं को निशाना बनाना लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए उचित संकेत नहीं माना जा सकता .लोकतंत्र में असहमति और आलोचना का अधिकार सभी को है, लेकिन किसी आस्था के समूल नाश की भाषा सामाजिक सौहार्द और संवैधानिक मर्यादा दोनों पर प्रश्नचिह्न खड़े करती है . देशभर में उठ रही प्रतिक्रियाओं के बीच अब यह सवाल प्रमुखता से पूछा जा रहा है कि क्या स्टालिन परिवार इस बयान पर देश से माफी मांगेगा, या फिर यह विवाद भी राजनीतिक बयानबाजी बनकर सीमित रह जाएगा .फिलहाल इतना स्पष्ट है कि सनातन धर्म को लेकर दिया गया यह बयान तमिलनाडु की राजनीति से निकलकर राष्ट्रीय बहस का विषय बन चुका है .

**भारत** की सांस्कृतिक चेतना और हजारों वर्षों पुरानी परंपरा रहे सनातन धर्म को लेकर तमिलनाडु की राजनीति एक बार फिर विवादों के केंद्र में है.पूर्व मुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन द्वारा विधानसभा में सनातन को खत्म कर देना चाहिए जैसी टिप्पणी ने देशभर में नई बहस छेड़ दी है.इससे पहले वर्ष 2023 में भी वे सनातन धर्म की तुलना डेंगू, मलेरिया और कोरोना जैसी बीमारियों से कर चुके हैं.उस समय भी बयान को लेकर व्यापक विरोध हुआ था, लेकिन अब दोबारा उसी प्रकार की भाषा ने यह प्रश्न खड़ा कर दिया है कि क्या हिंदू आस्था पर टिप्पणी करना कुछ राजनीतिक दलों की स्थायी रणनीति बन चुकी है?

तमिलनाडु को लंबे समय से सामाजिक समरसता और धर्मनिरपेक्ष राजनीति का उदाहरण बताया जाता रहा है.राज्य में लगभग 87 प्रतिशत आबादी हिंदू समाज से जुड़ी हुई है, जबकि ईसाई समुदाय की संख्या लगभग 6 प्रतिशत बताई जाती है.ऐसे प्रदेश में सनातन धर्म को समाप्त करने जैसी बात कहना करोड़ों लोगों की धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाला विषय बन गया है.राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर सबसे अधिक चर्चा इस बात को लेकर हो रही है कि क्या किसी अन्य धर्म के विरुद्ध भी कोई नेता इस प्रकार की भाषा का प्रयोग कर सकता है? यदि कोई सार्वजनिक मंच से इस्लाम या ईसाई धर्म को मिटाने की बात कहे, तो क्या राजनीतिक दलों और तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग की प्रतिक्रिया इतनी ही शांत रहती?

यही वह प्रश्न है जो अब देशभर में बहस का विषय बना हुआ है. इस पूरे विवाद में तमिलनाडु के वर्तमान मुख्यमंत्री जोसेफ विजय की चुप्पी भी चर्चा के केंद्र में है.विधानसभा में दिए गए इस बयान के बाद मुख्यमंत्री की ओर से कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया सामने नहीं आई.राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि मुख्यमंत्री होने के नाते उनसे अपेक्षा थी कि वे सभी धर्मों और आस्थाओं के सम्मान की बात करते. लेकिन सार्वजनिक रूप से उनकी ओर से कोई कड़ा विरोध न आने के कारण विपक्ष और हिंदू संगठनों ने सवाल उठाने शुरू कर दिए हैं.जोसेफ विजय और उदयनिधि स्टालिन के पुराने संबंधों को लेकर भी चर्चाएं तेज हैं.तमिल फिल्म कुरुवी में उदयनिधि स्टालिन निर्माता-दिग्दर्शक की भूमिका से जुड़े थे, जबकि विजय मुख्य अभिनेता थे.ऐसे में राजनीतिक समीकरणों और व्यक्तिगत संबंधों को लेकर भी कई प्रकार की चर्चाएं सामने आ रही हैं.

हालांकि लोकतंत्र में व्यक्तिगत संबंध अलग विषय हैं, लेकिन जब करोड़ों लोगों की आस्था का मामला हो, तब जनता निष्पक्ष और स्पष्ट प्रतिक्रिया की अपेक्षा करती है.इतिहास गवाह है कि सनातन धर्म को समाप्त करने या उसकी जड़ों को कमजोर करने के अनेक प्रयास हुए, लेकिन भारत की सांस्कृतिक चेतना सदैव मजबूत होकर उभरी.सनातन केवल पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिनः जैसे सार्वभौमिक विचारों पर आधारित जीवन-दर्शन है.यही कारण है कि इसे केवल एक धार्मिक पहचान के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की आत्मा के रूप में देखा जाता है.तमिलनाडु की इस पूरी घटना ने हिंदू समाज के सामने एक बड़ा प्रश्न खड़ा कर दिया है. जब राज्य की लगभग 87 प्रतिशत आबादी सनातन परंपरा से जुड़ी हो, तब उसी समाज की आस्था पर खुले मंच से प्रहार किए जाएं और सत्ता मौन बनी रहे, तो यह केवल राजनीतिक विषय नहीं रह जाता, बल्कि सामाजिक चेतना का प्रश्न बन जाता है.

आज आवश्यकता केवल प्रतिक्रिया देने की नहीं, बल्कि संगठित वैचारिक जागरण की है.हिंदू समाज को यह समझना होगा कि लोकतंत्र में संख्या केवल आंकड़ा नहीं होती, बल्कि सांस्कृतिक आत्मविश्वास और वैचारिक सजगता का प्रतीक भी होती है.जिस सनातन ने हजारों वर्षों तक भारत की सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को जीवित रखा, उसी सनातन के विरुद्ध यदि बार-बार अपमानजनक शब्द बोले जा रहे हैं और बहुसंख्यक समाज मौन रह जाता है, तो यह आत्ममंथन का विषय है.तमिलनाडु में एक ईसाई मुख्यमंत्री का सनातन विरोधी बयान पर चुप रहना भी राजनीतिक और सामाजिक विमर्श का विषय बन गया है.

**( लेखक -वरिष्ठ पत्रकार एवं समसामयिक विश्लेषक, सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों के सजग हस्ताक्षर )**

# 'एक देश एक चुनाव' की दिशा में कदम

*एक राष्ट्र एक चुनाव प्रस्ताव के समर्थकों का दावा है कि लोकसभा व राज्य विधानसभा चुनाव साथ कराने का फायदा यह भी होगा कि लंबे समय तक सुरक्षा बल तैनात करने की जरूरत नहीं रह जाएगी. आचार संहिता की वजह से होने वाली दिक्कतें कम होंगी. बार-बार विकास कार्य नहीं रोकने पड़ेंगे.*

**एक** बार फिर 'वन नेशन वन इलेक्शन' के पक्ष में माहौल बनाया जा रहा है. इस प्रस्ताव की जांच कर रही संयुक्त संसदीय समिति गुजरात का त्रिदिवसीय दौरा कर रही है. समिति के अध्यक्ष पीपी चौधरी ने कहा कि यदि लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एकसाथ कराए जाएं तो भारत 7 लाख करोड़ रुपए बचा सकता है और इससे देश की जीडीपी में 1.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो सकती है. यह समिति अब तक महाराष्ट्र, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब व कर्नाटक का दौरा कर चुकी है. एक राष्ट्र एक चुनाव प्रस्ताव के समर्थकों का दावा है कि लोकसभा व राज्य विधानसभा चुनाव साथ कराने का फायदा यह भी होगा कि लंबे समय तक सुरक्षा बल तैनात करने की जरूरत नहीं रह जाएगी. आचार संहिता की वजह से होने वाली दिक्कतें कम होंगी. बार बार विकास कार्य नहीं रोकने पड़ेंगे. राजनीतिक पार्टियों को लगातार चुनाव अभियान में व्यस्त नहीं रहना पड़ेगा. इसमें यही दिक्कत है कि लोकसभा चुनाव के साथ कितनी ही विधानसभाओं के मध्यावधि चुनाव कराने होंगे. ऐसे चुनाव में कम बहुमत वाली सरकारें बनेंगी जिससे चुनाव सिर्फ कवायद बनकर रह जाएंगे. राष्ट्रीय मुद्दे इतने प्रभावशाली हो जाएंगे कि स्थानीय समस्याओं व मुद्दों को पीछे छोड़ देंगे. चुनाव व जनादेश का लचीलापन खत्म हो जाएगा. इससे संघीय व्यवस्था कमजोर पड़ सकती है. केंद्रीय सत्ता का राज्यों पर वर्चस्व बढ़ जाएगा. आशंका यही रहेगी कि एकसाथ चुनाव कराने से कहीं एक ही सबल पार्टी अपने संसाधनों व दबाव से अधिकांश राज्यों में सरकार न बना ले. इससे विपक्षी पार्टियों को खामियाजा भुगतना पड़ेगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

मध्य क्षेत्र की डायरी

# किसानों के दर्द को समझे सरकार

मध्य प्रदेश में किसान वाकई में परेशान हैं। हमारे अन्नदाता किसानों को अपने फसल बेचने मे किस तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, उनके दर्द क्या हैं, यह बात सरकार को समझना चाहिए। यूं तो सरकार ने फसल खरीद की तारीख बढ़ा 28 मई तक कर दी है लेकिन असली समस्या यह है कि अफसरशाही की वजह से किसानों के स्लॉट बुक नहीं हो रहे हैं। इसके कारण वे अपनी फसल बेचने के हकदार नहीं बन पा रहे हैं। एक एक जिले से 30 से 40 हजार किसान फसल बेचने पंजीयन कराते हैं लेकिन वर्तमान में आलम यह है कि वे पंजीकरण नहीं करवा पा रहे हैं। लाखों किसान छटपटा रहे हैं। उनके पास आमदनी का और कोई साधन नहीं है। फसलें बेच कर ही वे बच्चों की पढ़ाई, शादी विवाह और रिश्ते नाते सब करते हैं। आप को बता दें कि सरकार ने कहा था कि सबसे पहले छोटे और मंझौले किसानों के फसल खरीदे जाएंगे,उसके बाद बड़े किसानों से खरीद होगी। लेकिन इस पर अमल नहीं हुआ। जबकि किसानों को फसलों की बुआई से लेकर कटाई तक समस्याओं से दो-चार होना पड़ता है। खेती किसानी की राह में खाद और सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता भी उनके लिए गंभीर समस्या है। सरकार लाख दावे करे लेकिन इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि किसान आर्थिक और मानसिक रूप से परेशान हैं और इसके लिए मध्यप्रदेश सरकार की अफसरशाही सबसे ज्यादा जिम्मेदार है। यही कारण है कि सरकार विपक्षी दल कांग्रेस के निशाने पर है। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष जीतू पटवारी और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने सरकार पर आरोप लगाया है कि भारतीय जनता पार्टी के राज में किसानों के साथ छलावा हो रहा है। यह भी सच है कि विपक्षी नेताओं के आरोप को एकदम सिरे से खारिज नहीं कर सकते हैं। किसानों को इतनी भीषण गर्मी में घंटों कतार में क्यों खड़े होना पड़ रहा है? गत दिनों एक किसान की मौत भी हो गई। इसके लिए कौन जिम्मेदार होगा, यह बड़ा सवाल है और इस मसले पर लीपापोती बंद करके सरकार को तत्काल प्रभाव से फसल खरीद के लिए बेहतर मैकेनिज्म को अपनाना चाहिए और खरीद से जुड़े भ्रष्ट अधिकारियों को इस सिस्टम तुरंत बाहर करना चाहिए। क्योंकि ये भ्रष्टाचार करते हैं और बदनाम सरकार होती है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री मोहन यादव ने समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी की तारीख 23 मई से बढ़ाकर 28 मई कर दी है। इस निर्णय के तहत, जिन किसानों के स्लॉट 23 मई तक बुक थे, वे 28 मई तक अपनी गेहूं की उपज खरीदी केंद्रों पर बेच सकते हैं। हालांकि, हरदा , विदिशा, राजगढ़, नर्मदापुरम समेत कई जिलों में कई किसान अभी भी खरीदी केंद्रों पर लंबी कतारों में खड़े हैं लेकिन शासन को चिंता नहीं है किसानों का कहना है कि वर्तमान तारीख तक सभी का गेहूं तुल पाना संभव नहीं है।

दिलीप झा

प्रदेश के कई जिलों में भीषण गर्मी ने लोगों को हलाकान कर दिया है। दिन के साथ साथ रात के तापमान ने लोगों के हाल बेहाल कर दिए है। दिन में लू के थपेड़े और रात में उमस से लोग परेशान हो रहे हैं। हालात यह है कि रोजाना रात में 12 के बाद एक घंटे के बिजली गुल हो रही है। घरों की बिजली से लेकर स्ट्रीट लाइट भी बंद हो जाती है। लाइट बंद होने के बाद गर्मी से परेशान लोग उठकर घरों के बाहर निकल आते हैं. हैरानी की बात है कि बिजली गुल होने के एक घंटे पहले से मोबाइल पर मैसेज पहुंच रहे हैं। मैसेज में बताया जा रहा है कि लोड बढ़ने और मेंटेनेंस के कारण बिजली गुल होने वाली है। इसके बाद कभी एक बजे तो कभी दो बजे बिजली गुल कर देते हैं। इससे ग्रामीण परेशान हो चुके हैं। ग्रामीणों में विद्युत विभाग की इस हरकत से आक्रोश पनप रहा है.

कई किसान तीन दिनों से अधिक समय से खरीदी केंद्रों पर अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री के फैसले का स्वागत करते हुए तारीख को 28 मई से बढ़ाकर 2 जून तक करने की मांग की है, जिससे सभी पंजीकृत किसानों का गेहूं खरीदा जा सके। हरदा के कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने बताया कि मुख्यमंत्री ने किसानों के लिए महत्वपूर्ण फैसला लिया है और तारीख बढ़ा दी गई है। वहीं, प्रशासन का दावा है कि खरीदी केंद्रों का लगातार निरीक्षण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिले में अब तक 83 प्रतिशत किसानों से गेहूं की खरीदी हो चुकी है और सभी किसानों का गेहूं समय पर खरीदने का प्रयास किया जा रहा है। जिला मुख्यालय की किसान मार्केटिंग सोसायटी पर किसानों को टोकन देकर तुलाई की जा रही है। कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने बताया कि मुख्यमंत्री ने किसानों के लिए महत्वपूर्ण फैसला लिया है और तारीख बढ़ा दी गई है।

निशानेबाज

# गिफ्ट का पड़ेगा अनुकूल प्रभाव मेलोडी खाओ, खुद जान जाओ

हमने ड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी को मेलोडी चॉकलेट का डिब्बा भेंट किया. क्या यह इस बात का संकेत था कि कुछ मीठा हो जाए?' कहा, 'यह तो कैडबरी चॉकलेट की विज्ञापन लाइन है- कुछ मीठा हो जाए! मेलोडी चॉकलेट पार्ले कंपनी की है. इस चॉकलेट का संदेश है- मेलोडी खाओ, खुद जान जाओ! मानकर चलिए कि मेलोनी जब मेलोडी खाएंगी तो मोदी के 'मन की बात' बिना कहे अपने आप जान जाएंगी. खास बात यह है कि मोदी ने मेलोनी को मीठी चॉकलेट खिलाई. इससे हिंदी का अनुप्रास अलंकार बनता है जिसे अंग्रेजी में सिंटेक्स कहते हैं. मिसाल के तौर पर आपने सुना होगा- चंदू के चाचा ने चंदू की चाची को चांदनी चौक पर चांदी के चम्मच से चटनी चटाई. इस वाक्य में 'च' अक्षर का इस्तेमाल 12 बार किया गया है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह चॉकलेट नहीं, इंडिया का इटली की ओर इशारा है. दोनों देशों के बीच बढ़ते मधुर रिश्तों का सहारा है. यह इंटीमेसी वाली रोम की रोमांटिक डिप्लोमेसी है जिसमें मोदी ने कहा, ओ माई फ्रेंड मेलोनी!'

हमने कहा, 'विदेशी नेताओं को सौजन्यपूर्वक कुछ न कुछ गिफ्ट देने का रिवाज है. मोदी ने ट्रंप को भगवद्गीता की प्रति भेंट की थी तो उन्हें ऐसी प्रेरणा मिली की ईरान के खिलाफ महाभारत शुरू कर दिया.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ट्रंप की बात अलग है. किसी महिला नेता को गिफ्ट देना है तो बनारसी साड़ी या महंगा वाला परफ्यूम देना उपयुक्त रहता. चॉकलेट तो तुरंत मुंह में घुल जाएगी फिर बचेगा क्या? भारत के विभिन्न राज्यों में तरह-तरह के हैंडीक्राफ्ट बनते हैं. ऐसी हस्तकला वाली सामग्री देते जो मेलोनी के मन को भाती.'

हमने कहा, 'प्रधानमंत्री को आपकी सलाह की जरूरत नहीं है. उन्हें परामर्श देने के लिए पार्टी का परामर्शदाता मंडल है जिसमें आडवाणी और मुरलीमनोहर जोशी जैसे बुजुर्गवार बैठे हैं. विदेश मंत्रालय के उच्चाधिकारी और सीनियर आईएएस अफसर भी मोदी को राय दे सकते हैं कि कौन सा गिफ्ट बढ़िया रहेगा.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, मेलोडी चॉकलेट भेंट करने की खबर का ऐसा असर पड़ा कि पार्ले कंपनी के शेयर में उछाल आ गया. उसकी प्रतिद्वंद्वी कंपनी ब्रिटेनिया मन मसोस कर रह गई होगी.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

## CROSS WORD 12266 -डॉ.सागर खादीवाला

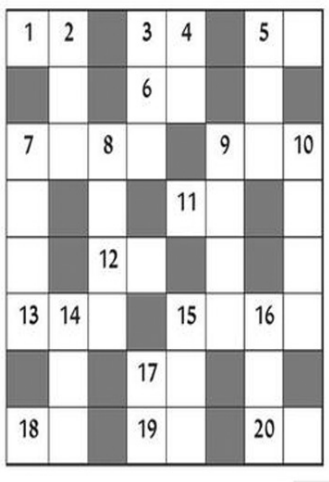

2. अभिवक्ता, दूसरों की ओर से मुकदमों की पैरवी करने वाला (उर्दू) 3. केला, एक हिरन, हाथी पर रखा जाने वाला झंडा 4. पुरुष, वीर, पति 5. लपेटने की क्रिया या भाव 7. कुर्बानी 8. केवल साग-भाजी तथा अन्न खाने वाला 9. ईसा संवत् के वर्ष का दूसरा मास 10. अधिक मात्रा में वस्तुएं तैयार करने का स्थान 14. कालीन 15. समाचार, सूचना 16. दाह 17. किसी वस्तु पर अपना हक जतलाना, मुकदमा

**बाएं से दाएं**

1. लाश, मृतदेह 3. अल्प, थोड़ा, छोटा, क्वचित, खराब (उर्दू) 5. सौ हजार, सौ हजार की संख्या (सं.) 6. पीड़ा 7. शक्तिशाली 9. कोरी तुकबंदी वाली कविता, धुनियों की धुनकी 11. पानी, नीम के पेड़ का रस 12. दबाकर रखने वाली 13. छोटा नगर 15. मोल लेना, क्रय करना 17. दबने या दबाने की क्रिया या भाव 18. जिसके आसपास का तल ऊंचा हो, जो गहराई पर हो, छोटा 19. आघात, सप्ताह का दिन 20. कई कागजों को एक में गूंथना

**ऊपर से नीचे**

**Solution 12265**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ | स | मा | न | ■ | प्र | वा | स |
| ज | ब | र | न | ■ | श्न | ■ | र |
| मा | ■ | फी | ■ | फ | ■ | बा | ग |
| ना | गि | न | ■ | ह | ठ | ध | र्मी |
| ■ | र | ■ | प | रा | ग | ना | ■ |
| को | ना | ■ | ह | ना | ना | ■ | म |
| प | र | ख | ना | ■ | ■ | मा | ह |
| ना | ■ | ज | वा | ह | र | ला | ल |

## ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

### आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, यात्रा का योग है,व्यय मेंकमी होगी, व्यवसाय मेंसुधार होगा, वर्ष के मध्य में परिश्रम केउपरांत आंशिक सफलता प्राप्त होगी, शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, अत्याधिक व्ययहोगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक लाभ के योग हैं, व्यवसाय मेंवृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होने का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का मान सम्मान बढ़ेगा, शिक्षा के क्षेत्र मेंवृद्धि होगी, यश कीर्ति बढ़ेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को शत्रु षड़यंत्र से सतर्कता बांछनीय, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को संयम से कार्य करना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का बचपन की मित्रता का लाभ प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अपनी कार्यक्षमता का परिणाम सुखद प्राप्त होगा.

### आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, चतुर, व्यवहार कुशल, कल्पना प्रिय, दार्शनिक, हंसमुख, एवं मिलनसार होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, लेखन अध्ययन में रूचि रहेगी, माता पिता का भक्त होगा.

**मेष**- परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मे आसार हैं, विवादास्पद मामले सुलझा सकते हैं, रूके हुये कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, राजकीय सम्मान मिलेगा.

**वृषभ**- दूसरों के मामले में दखल से बचें, अटके काम पूरा करने में मित्रों की मदद मिलेगी, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, प्रवास का योग है.

**मिथुन**- अधूरी योजना फिर शुरू करने का मन बनेगा, मानसिक प्रसन्नता रहेगी, मनोरंजन, भ्रमण आमोद प्रमोद के अवसर मिलेंगे, उन्नति का योग है.

**कर्क**- मार्गदर्शन से अच्छी सफलता की संभावना है, परिवार आयोजन प्रसन्नता देंगे, जमिथुन जायजाद संबंधी विवाद हल होंगे, मित्रों का सहयोग रहेगा.

**सिंह**- आपके सरल व्यवहार का लोग फायदा उठा सकते है, नई योजना बनेगी, नौकर चाकरों का सहयोग रहेगा, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करना हितकर रहेगा.

**कन्या**- आपके रूखे व्यवहार से घर में कलह पैदा हो सकती है, नई योजना लाभदायक रहेगी, आकस्मिक लाभ होगा, विशिष्टजनों से मेलजोल बढेगा.

**तुला**- नए काम की शुरूआत औरकानूनी मसले पर सबकी राय लेकर आगे बढ़े, सफलता मिलेगी, भाग्यवर्धक शुभ समाचार मिलेगा, मनोबल बना रहेगा.

**वृश्चिक**- धार्मिक कार्यो में खर्च की संभावना बनेगी, नए संपर्को का लाभ मिलेगा, आलस्य के कारण कामकाज में अरूचि रहेगी, दैनिक कार्यो पर ध्यान दें.

**धनु**- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे, कार्यस्थल पर आपके काम की मिली जुली प्रतिक्रिया रहेगी, पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा, व्यवसाय अच्छा चलेगा.

**मकर**- आप जिन पर भरोसा कर रहे हैं, वे आपका विरोध करेंगे, शुभ समाचार मिलेगा, यश प्राप्त होगा. मनोकामना की पूर्ति होगी, मन में हर्ष रहेगा.

**कुम्भ**- अपने काम को वरीयता से निपटाने का प्रयत्न करें, अन्यथा मुश्किल हो सकती है, मानसिक अस्थिता रहेगी, बने बनाये कार्यों में व्यवधान आ सकता है.

**मीन**- वैभव के सामान पर बड़े खर्च की संभावना है, साहसिक पराक्रम बढेगा, जमिथुन जायजाद के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, राजकीय सम्मान मिलेगा.

### उदयकालीन ग्रह चाल

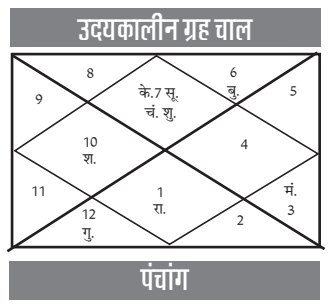


### पंचांग

रा.मि. 02 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमीं शनिवासरे दिन 10/8, आश्लेषा नक्षत्रे दिन 7/18, ध्रुव योगे दिन 11/17, वणिज करणे सू.उ. 5/19, सू.अ. 6/41, चन्द्रचार कर्क दिन 7/18 से सिंह, शु.रा. 5,7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

### व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमीं को आश्लेषा नक्षत्र के प्रभाव से सूत, कपास, गेहूँ, जौ, चना, चांवल, मक्का, सोना, चांदी, के भाव मे तेजी होगी, गुड़ खांड, ज्वार, बाजरा, धनियां, के भाव में मंदी होगी, जूट, पाट, बारदाना पूर्ववत् रहेंगे. भाग्यांक 5601 है.

## SUDOKU 7398

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 8 | | | 6 | | | | |
| | | | | | 5 | | | |
| | | 9 | | | | 7 | | 3 |
| | 1 | | | 8 | | | | 2 |
| | | | 7 | | 4 | | | |
| 6 | | | | 3 | | | 8 | |
| 5 | | 7 | | | | 4 | | |
| | | | 8 | | | | | |
| | | | | 1 | | | 6 | |

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

**नवभारत सू-दोकू 7397**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | 4 | 5 | 3 | 1 | 8 | 7 | 6 | 2 |
| 1 | 8 | 6 | 7 | 2 | 5 | 4 | 9 | 3 |
| 2 | 7 | 3 | 9 | 4 | 6 | 8 | 1 | 5 |
| 6 | 3 | 9 | 1 | 7 | 4 | 2 | 5 | 8 |
| 5 | 2 | 4 | 8 | 9 | 3 | 6 | 7 | 1 |
| 7 | 1 | 8 | 6 | 5 | 2 | 9 | 3 | 4 |
| 4 | 6 | 7 | 5 | 8 | 1 | 3 | 2 | 9 |
| 8 | 9 | 1 | 2 | 3 | 7 | 5 | 4 | 6 |
| 3 | 5 | 2 | 4 | 6 | 9 | 1 | 8 | 7 |